चलता पहाड़

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 1 6/16/23 23:28

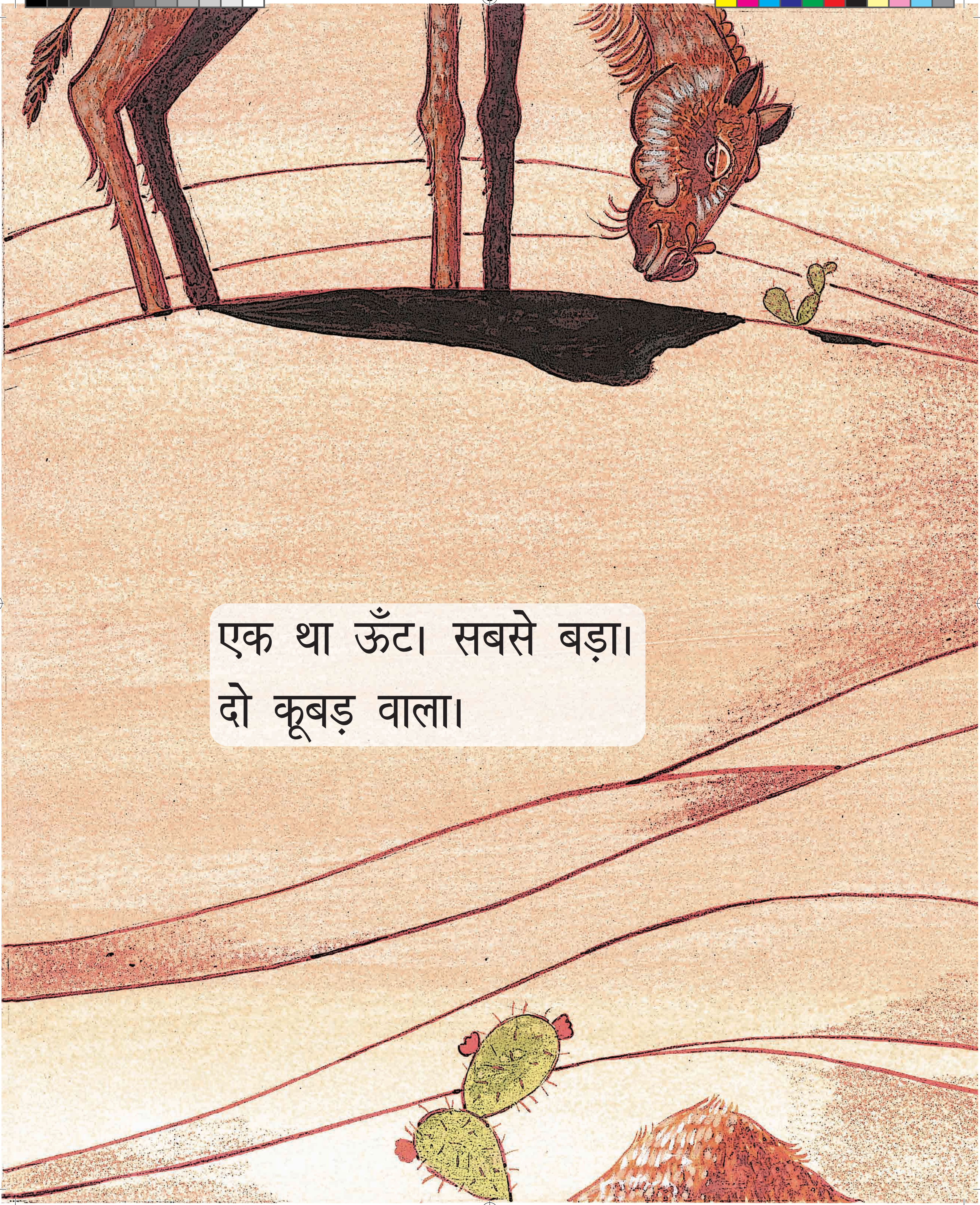

एक था ऊँट। सबसे बड़ा।
दो कूबड़ वाला।

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 2 6/16/23 23:28

बड़ा था, इसलिए इतराता था।
अलग-थलग रहता था।

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 3 6/16/23 23:28

एक दिन जोर की आँधी आई।
खूब मिट्टी उड़ी।

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 4 6/16/23 23:28

ऊँट सोता रहा।
उसके चारों ओर मिट्टी जम गई।
पर कूबड़ बाहर थे।

दो कछुए वहाँ पहुँचे। वे
कूबड़ को पहाड़ समझ बैठे।

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 6 6/16/23 23:28

वे लगे चढ़ने-उतरने।
उन्हें मजा जो आ रहा था।

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 7 6/16/23 23:28

तभी ऊँट की नींद खुली।
वह हिला-डुला और उठा।

कछुए झट से
कूदे। बोले-
भागो, पहाड़
तो चल रहा है।

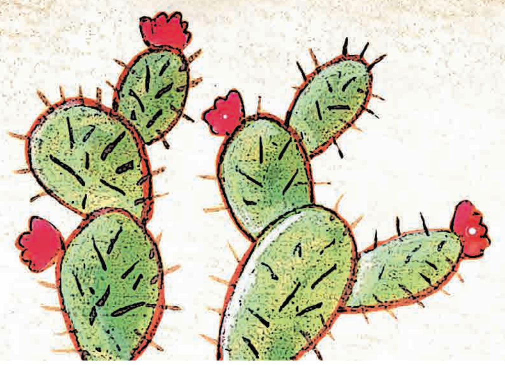

ऊँट सोचने लगा,
पहाड़ क्या होता है।

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 9 6/16/23 23:28

एक दिन बहुत गरमी थी।
ऊँट जा बैठा पानी में।
पर कूबड़ बाहर थे।

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 10 6/16/23 23:28

दो मेंढक आए।
वे कूबड़ को पहाड़
समझ बैठे।

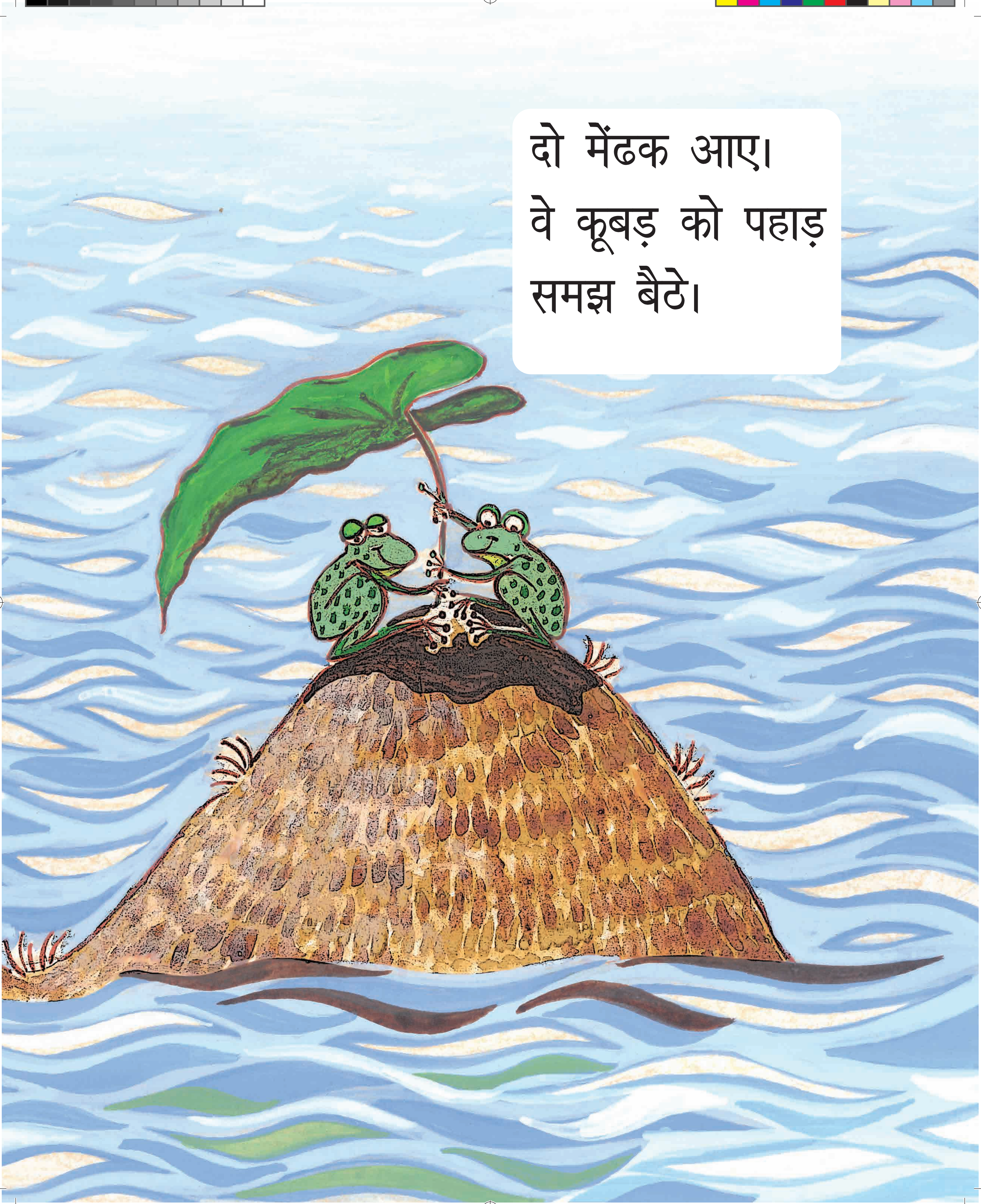

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 11 6/16/23 23:28

शाम हुई, ऊँट उठा।
मेंढक झट से कूदे।
बोले- भागो, पहाड़
तो चल रहा है।

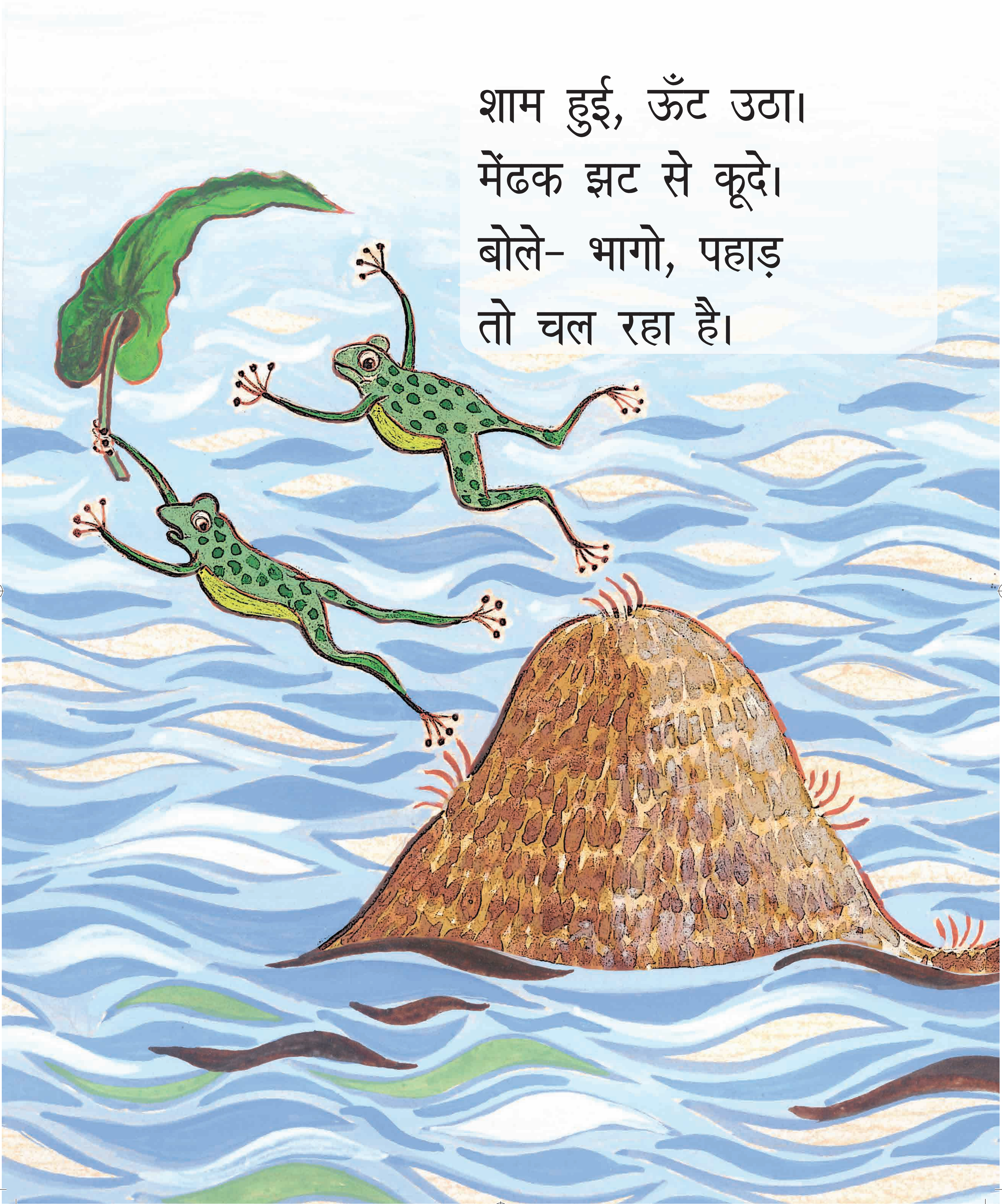

ऊँट सोचने लगा,
सब उसे पहाड़
क्यों बोल रहे हैं!

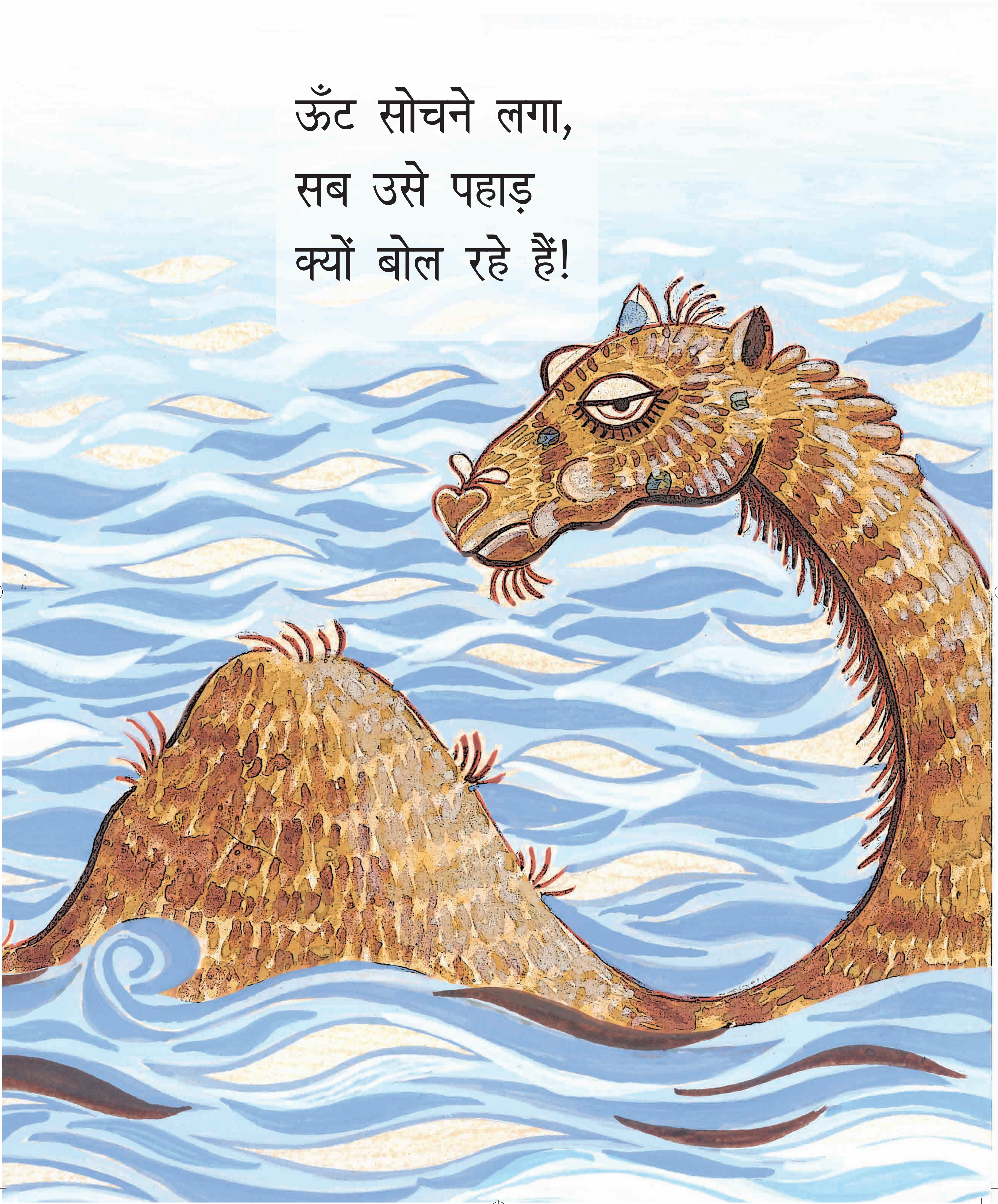

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 13 6/16/23 23:29

वह चल दिया पहाड़ ढूँढ़ने...

जंगल पार किया...

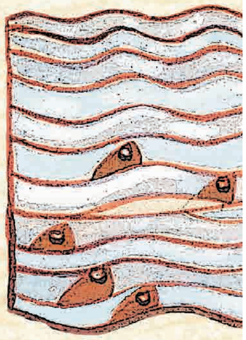

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 14 6/16/23 23:29

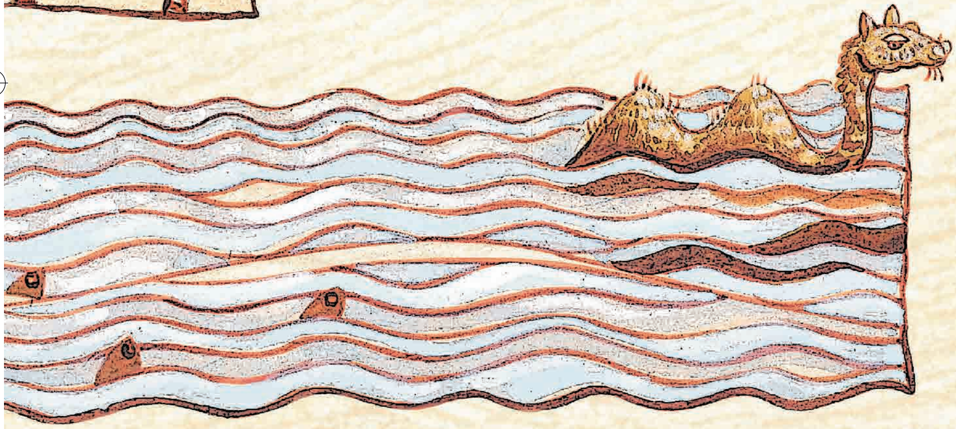

नदी पार की...

मैदान पार किया।

चलते-चलते रात हो गई। वह थककर
सो गया। रात को बरफ गिरी।

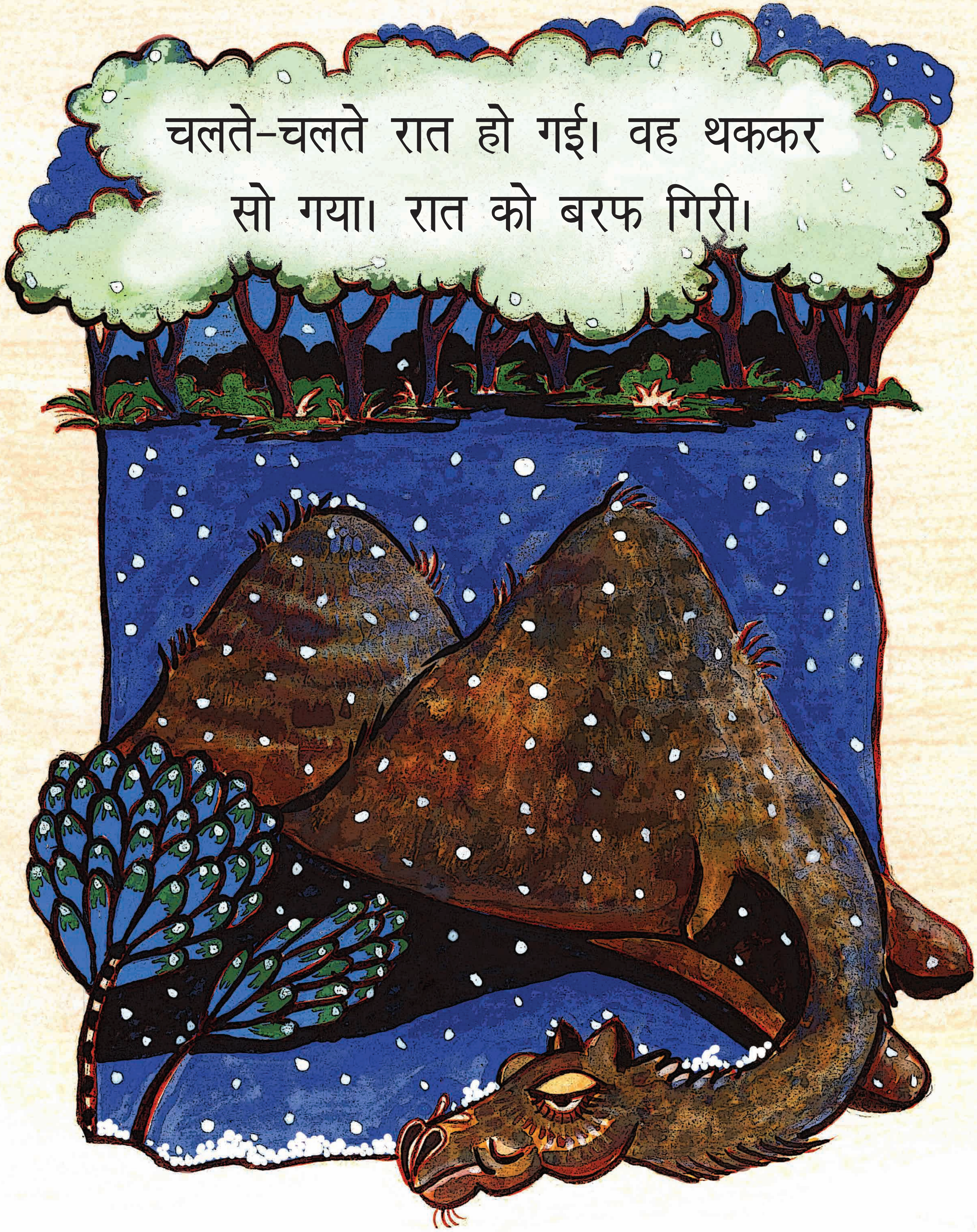

सुबह हुई तो चारों ओर बरफ थी।
पर कूबड़ बाहर थे।

दो चूहे वहाँ पहुँचे।
वे कूबड़ को पहाड़ समझ बैठे।
लगे उतरने-चढ़ने।

ऊँट की नींद खुली।
वह उठा। चूहे झट से कूदे।
बोले- भागो, पहाड़ तो चल रहा है।

तभी ऊँट की नजर
सामने पहाड़ पर पड़ी।

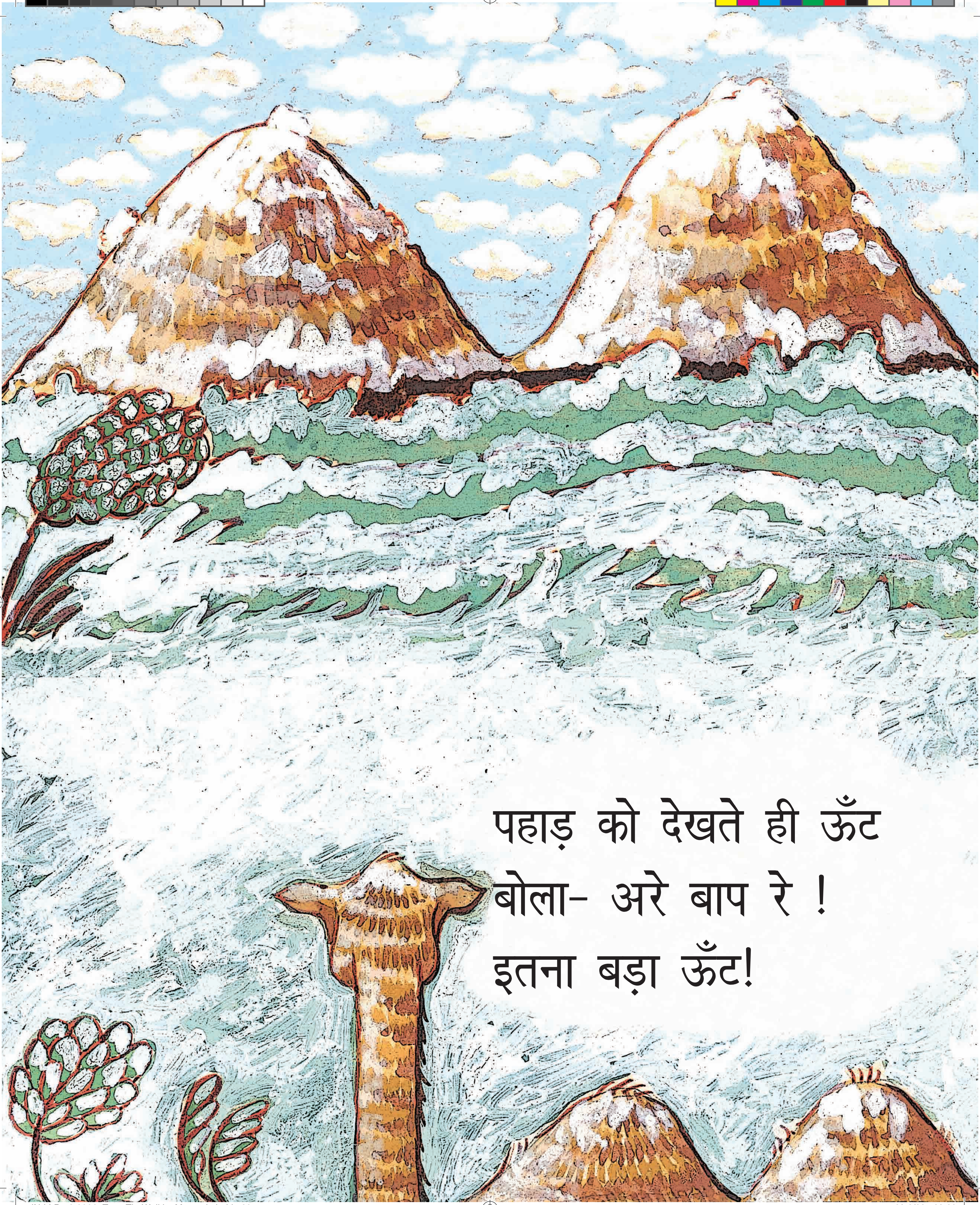

पहाड़ को देखते ही ऊँट
बोला- अरे बाप रे !
इतना बड़ा ऊँट!

IN-LLP-16-0006_Text_TheWalkingMountain.indd 20 6/16/23 23:29